एक अनूठा चित्रकार: सत्यजीत राय

अतनु राय व इन्द्राणी मजूमदार

एक चित्रकार के रूप में मुझे कई लोगों ने प्रभावित किया है। और यह सिलसिला आज भी जारी है। जब मैं दिल्ली आर्ट कॉलेज में पढ़ता था तो मेरे एक टीचर हुआ करते थे – प्रणब चक्रवर्ती। उन्होंने मेरे सामने चित्रों की पूरी दुनिया ही खोल दी थी। खास तौर पर चित्र कथाओं की। इनको देखने का एक खास सलीका उन्होंने ही मुझे सिखाया। मैंने जो कुछ भी सीखा है और सीख रहा हूँ उसमें बच्चों की संगत का काफी हाथ रहा है। मैं आज तक अपने बचपने को नहीं भूला हूँ और न ही बचपन की सीखों को। साथ ही मैंने हमेशा ही उन लोगों को बड़ी इज़्ज़त बख्शी है जिन्होंने अपने लिए जो काम चुना उससे जुड़े-अनजुड़े कई सारे कामों को बड़ी कुशलता से निभाया। मेरी नज़र में ऐसे ही एक महान व्यक्ति थे – जाने-माने फिल्म निर्देशक सत्यजीत राय।

सत्यजीत के दादा उपेन्द्र किशोर और पिता सुकुमार राय भी महान चित्रकार और लेखक थे। वे बच्चों की एक पत्रिका – *संदेश* – निकालते थे। इसमें चित्र और कहानियाँ होती थीं। उपेन्द्र किशोर के चित्रों और कहानियों की विषय वस्तुओं में गज़ब की विविधता होती थी। आज भी लोग उन्हें बहुत पसन्द करते हैं। उनके बेटे सुकुमार राय को ऊलजलूल या बे सिर पैर की कहानियाँ/कविताएँ लिखने में महारत थी। लिखने के साथ वे वैसे ही चित्र भी बनाते थे। उनके चित्र अजीबोगरीब होने के बावजूद देखने में बहुत सुन्दर लगते थे।

सत्यजीत राय की कला में बेहद रुचि थी। वे व्यावसायिक कलाकार बनना चाहते थे। इसलिए कॉलेज की पढ़ाई खत्म करने के बाद वे शान्तिनिकेतन चले गए। वे यहाँ तीन साल रहे। इस दौरान उन्होंने नन्दलाल बोस, बिनोद बिहारी मुखर्जी जैसे कला जगत के गुरुओं से भारतीय कला के साथ-साथ पूर्व और पश्चिम की कलाओं की बारीकियाँ भी सीखीं। यहीं रहते हुए उन्हें अजन्ता-एलोरा जाने का मौका भी मिला। इन गुफाओं के चित्रों ने उनके दिमाग में एक गहरी छाप छोड़ दी।

1943 में वे कलकत्ता में एक विज्ञापन एजेंसी – डी. जे. केमेर – में काम करने लगे। यहाँ उन्हें मलेरिया की गोली – प्लूड्रिन – का विज्ञापन तैयार करने का काम मिला। इसके लिए उन्होंने दो घर बनाए। एक मध्यमवर्गीय बंगाली घर था और एक अमीर वर्ग का। चित्र में उन्होंने जिस बारीकी से दोनों घरों की चीज़ों को बनाया था वह देखने लायक था। यह पहली बार था जब विज्ञापन की दुनिया में भारतीय चीज़ें शामिल की गई थीं। वे अपने सभी चित्रों में बारीकियों पर बहुत ध्यान देते थे। आज भी उनके चित्र इन खूबियों के कारण जाने जाते हैं।

सत्यजीत राय ने अपने एक दोस्त के लिए कई किताबों के कवर भी बनाए – सभी चित्र एक-दूसरे से बिलकुल

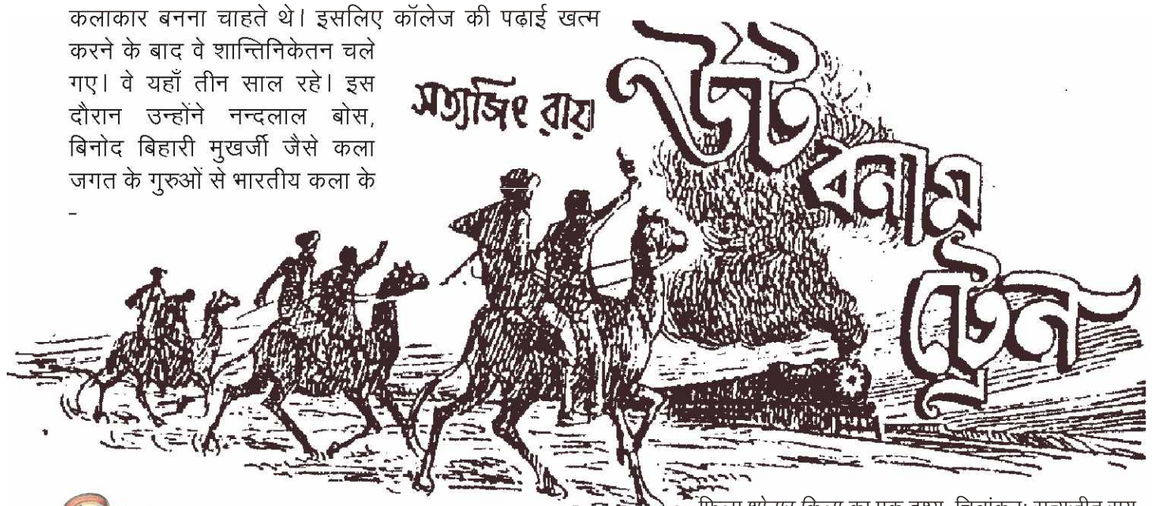

फिल्म *शोनार किला* का एक दृश्य, चित्रांकनः सत्यजीत राय

जुदा थे। एक दिन उनके इसी दोस्त ने कहा कि वे एक उपन्यास *पाथेर पाँचाली* का बच्चों का संस्करण छापना चाहते हैं। वे चाहते थे कि सत्यजीत इसके चित्र बनाएँ। सत्यजीत को उपन्यास बहुत पसन्द आया। उन्होंने इसके लिए चित्र तो बनाए ही, इस कहानी पर फिल्म बनाने का ख्याल उन्हें इसी दौरान आया। इस वक्त कौन जानता था कि यह फिल्म भारतीय सिनेमा के इतिहास में मील का पत्थर साबित होगी!

पाथेर पाँचाली बनने के 6 साल बाद, 1961 में उन्होंने *संदेश* को वापस शुरू किया। इसमें सत्यजीत राय ने कहानियाँ भी लिखीं, चित्र भी बनाए। वे चित्र काले-सफेद में ही बनाते थे। काला रंग कभी एकदम गहरा होता, कभी थोड़ा हल्का। अपने जासूसी उपन्यास के लिए चित्र बनाते वक्त उनकी यह तकनीक बड़ी काम आई। गहरी मोटी लकीरों और लम्बी परछाइयों वाले चित्रों ने कमाल का असर छोड़ा। *संदेश* के चित्रों में बच्चों से उनका गहरा सम्बन्ध साफ झलक आता है। बच्चों के लिए चित्र बनाने वाले किसी भी कलाकार के लिए इस तरह के सम्बन्ध बेहद ज़रूरी होते हैं।

1992 में उनकी मृत्यु होने तक सत्यजीत लगातार *संदेश* का सम्पादन करते रहे। उन्होंने 31 फिल्में और 5 डॉक्युमेंट्री फिल्में बनाईं। कला उनके हर काम में नज़र आती है। वे अपनी फिल्मों के हर सीन का स्केच बनाते। पोशाक, ज़ेवर, सेट आदि भी वही डिज़ाइन करते थे। यहाँ तक की अपनी फिल्मों के पोस्टर और फिल्म के विज्ञापन सम्बन्ध सामग्री भी वही तैयार करते। फिल्म का नाम व सहयोगियों की सूची की लिखावट भी उन्हीं की होती थी। खासतौर पर बंगाली में सजावटी लिखाई (कैलीग्राफी) की शुरुआत और उसमें बदलाव लाने का काम उन्होंने ही किया। सत्यजीत राय ने एक खास लिखाई (फॉन्ट) बनाई है उसे रे रोमन कहते हैं।

वैसे तो फिल्मों के सेट, पोशाकों और ज़ेवर के डिज़ाइन कोई किताब में छापने के हिसाब से तो बनाए नहीं जाते हैं। वे तो कलाकार द्वारा जल्दी-जल्दी खींची लकीरें होती हैं। लेकिन राय के स्केच भी काफी बारीकियाँ लिए होते थे।

राय ने कई जाने-माने भारतीयों और विदेशियों के चित्र बनाए। इतने सारे कामों में इतनी महारत हासिल करना किसी भी व्यक्ति को महान बनाने के लिए काफी होता है। लेकिन सत्यजीत राय जिस नम्रता से इन सब को करते थे वह उन्हें और महान बनाता है। उनकी मृत्यु से कुछ साल पहले जब उनसे उनके चित्रों के बारे में पूछा गया तो वे बोले:

मैं खुद को प्रमुख रूप से एक फिल्मकार मानता हूँ। इसके बाद बच्चों और बड़ों के लिए कहानीकार आता है। मैंने अपने चित्रों को कभी गम्भीरता से नहीं लिया। और उन्हें लोगों के बीच ले जाने लायक मैंने सचमुच कभी नहीं समझा।

मैं खुद को प्रमुख रूप से एक फिल्मकार ही मानता हूँ।

इसके बाद बच्चों और बड़ों के लिए कहानीकार आता है। मैंने अपने चित्रों को कभी गम्भीरता से नहीं लिया। और उन्हें लोगों के बीच ले जाने लायक मैंने सचमुच कभी नहीं समझा।